*"संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज"*

# एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन

## वार्षिक रिपोर्ट

## 2012


**175/148 A, Nai Basti, Barah Khamba, Kydganj, Allahabad, Uttar Pradesh-211003**

**E-mail: extraanorganization@yahoo.com**

**Mob: +91 8127254051, +91 9695907532, +91 9452401478**

# विवरण


संस्था का परिचय

संस्था का दृष्टिकोण एवं लक्ष्य

संस्था का उद्देश्य एवं कार्यनीतियां

क्लाओन एक्टिंग कार्यशाला

कार्यकारिणी सदस्यों की बैठक

नाटक डैडलॉक का निर्माण एवं प्रस्तुतियाँ

इस वर्ष की चुनौतियाँ

## एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन

(एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड)

**परिचय :** एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन (एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड) की नीव कई वर्षों के सघन चर्चा एवं विचारों के संघर्षों से गुज़रते हुए सन 2002 के 23 जनवरी को कलकत्ता में रखी गयी । संस्था की नीव की सिचाई में कला एवं रंगमंच कार्यकर्ता रिक्शा चालक साथी –इलाहाबाद, बूट मरम्मत कर्ता साथी-कोलकाता एवं रवीद्र भारती विश्वविध्यालय –कोलकाता, भारतेन्दु नाट्य अकेडमी-लखनऊ और फिल्म एण्ड टेलीविज़न इंस्टीट्यूट-पुणे में अध्ययन रत छात्र रहे हैं । एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन (एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड) अपने *मिशन "संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज"* की संकल्पना के साथ वचनबद्ध रहा है ।

संस्था अपने मिशन की ओर बढने और इसकी प्राप्ति के लिए कला और संस्कृतियों की विविधिता से आभूषित भारत के पारंपरिक कला और यहाँ की संस्कृतियों के आधार पर रंगमंच के नए सौंदर्यशात्रीय प्रतिमान रचने में इसके शोध और खोज में लगातार व्यस्त रहता आ रहा है । इस रंगमंचीय प्रतिमान को समाज में स्थापित करने के लिए हम निरंतर हमारी प्रक्रियामयी प्रस्तुतियों से दर्शक और अभिनेता के बीच की दूरियों को लगातार कम करने की कोशिश में हैं । क्योकि हमें ऐसा लगता है की किसी नाटक का उत्पाद मात्र से नहीं बल्कि नाटक और रंगमंच के अंदर व्याप्त जीवन मुखी शाश्वत प्रक्रियाएँ हमें हमारे मिशन "संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज" तक पहुंचा सकेंगी ।

संस्था की मुख्य रंगमंच प्रस्तुतियों में कुछ निम्न नाटक जिनका प्रस्तुति निम्न अंतर्राष्ट्रीय महोत्सवों में हुईं जैसे सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा लिखित 'हवालात' राष्ट्रिय नाट्य विध्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित भारत रंग महोत्सव -2009, अंतोन चेखोव द्वारा लिखित 'टेढ़ा दर्पण' राष्ट्रिय नाट्य

विध्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित भारत रंग महोत्सव -2010 तथा नेशनल थिएटर फेस्टिवल-केरला -2010 में, एवं धर्मवीर भारती द्वारा लिखित उपन्यास 'सूरज का सातवाँ घोडा' राष्ट्रिय नाट्य विध्यालय दिल्ली  द्वारा आयोजित भारत रंग महोत्सव -2011 एवं चेन्नई भारत रंग महोत्सव। इसके साथ ही साथ संस्था देश के अलग-अलग हिस्सों राजस्थान, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश में रंगमंच की टोलियों का निर्माण और कार्य भी कर रही एवं अनुभव इकत्र कर चुकी है ।

संस्था राष्ट्रिय स्तर पर कार्य करने हेतु नई दिल्ली से सन 2007 के 27 दिसम्बर को 'एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन' के नाम से  रजिस्टर किया है ।

## दृष्टिकोण

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने दृष्टिकोण में यह मानता है की भारत की पारंपरिक रंगमंच एवं लोक शैलियों शोध कर नए अभिनय शैलियों और नाट्य शैलियों के साथ नए सौदर्यशास्त्रीय प्रक्रियाओं का निर्माण करना । यह सौदर्यशास्त्रीय प्रतिमान हमें हमारे मिशन की प्राप्ति का निर्मित होता मार्ग है । इस मार्ग के निर्माण के लिए राष्ट्रीय और इच्छुक अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और रंगकर्मियों तक हमें अपने प्रक्रिया रंगमंच विधियों के साथ पहुँचना और इनका प्रस्तुति परक प्रसार ।

इस प्रसार के लिए हम अलग –अलग राज्यों के नाट्य एवं कला दलों तथा पारंपरिक संगीत टोलियों तक पहुँच रहे हैं जैसे : बीकानेर, राजस्थान में जन जागृति संस्था जो की एक नाट्य संस्था है , पश्चिम बंगाल के हुगली में आर्ट फ़ाउंडेशन ऑफ द एरा एवं जयपुर के दृश्य कला समूह अरविद तथा बीकानेर के सुफी संगीत गायकों के साथ मिल कर हम अपने मिशन को साझा कर रहे हैं ताकि हमारी सब की इस मिशन *"संवेदनशील, लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज"* के गठन की यात्रा में कला अपने कार्यवाहकों के साथ आगे आए ।

## लक्ष्य

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने मिशन *"संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज"* की प्राप्ति के लिए निम्न लक्ष्यों की ओर बढ़ रही है जो की इस प्रकार हैं । मिशन के अनुरूप एक ऐसा रूप विषयक (मॉडल) सामुदायिक स्तर पर "बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम" का निर्माण आगामी 2020 तक करना चाहती है । जहां शिक्षा, कला एवं रंगमंच में निरंतर प्रयोग और उनका स्थापन होता रहेगा संवेदनशील ,लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज के निरंतर निर्माण के लिए इसके लिए

भावी वर्तमान और आगंतुक पीढ़ियों के साथ इस प्रक्रिया का स्थापन हमें अतिआवश्यक महसूस होता रहा है । लक्ष्यों के कुछ निम्न बिन्दु इस प्रकार हैं:

- **सामुदायिक स्तर पर "बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम" का निर्माण के लिए बंजर भू-खंड खोजना और स्थानीय अथवा राज्य स्तरीय प्रशासनों से चर्चा**
- **सामुदायिक स्तर पर "बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम" का निर्माण**
- **बहूद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम के निर्माण के लिए चर्चाएँ चलाना राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर**
- **मॉडल के स्थापना के साथ ही साथ इस सामुदायिक स्तर पर "बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम" का विस्तार अन्य राज्यों में ।**

## उद्देश्य

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने मिशन तक पहुँचने के लिए जो भी लक्ष्य रूपी मार्ग तैयार कर रहा है। उसके लिए रंगमंच के क्षेत्र में निम्न प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्यरत है ।

- स्थानीय एवं अन्य राज्यीय कला एवं रंगकर्मियों तक पहुँचना
- अंतर्राष्ट्रीय रंगकर्मियों से निरंतर संवाद एवं अपने रंगविधियों एवं विचारों का साझा
- नाट्य प्रक्रिया कार्यशालाओं के तहत स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर रंगकर्मियों का निर्माण
- ज़्यादा से ज़्यादा दर्शकों तक पहुँचना और उनकी वैचारिक भागीदारी सुनिश्चित करना

## कार्यनीतियां

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने मिशन तक पहुँचने के लिए जो भी लक्ष्य रूपी मार्ग तैयार कर रहा है। उसके लिए रंगमंच के क्षेत्र में उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निम्न कार्यनीतियों पर कार्यरत है।

- संस्था के नाट्य प्रक्रिया प्रस्तुतियों का निर्माण उभर रहे निर्देशकों के द्वारा
- नाट्य उत्सवों में भागीदारी
- नाट्य प्रक्रिया कार्यशालाएँ
- दर्शक-अभिनेता संवाद
- रंगमंच एवं समाज पर स्थानीय वाकपीठों का आयोजन

जनवरी-मार्च

# क्लाओन एक्टिंग कार्यशाला

क्लाओन एक्टिंग कार्यशाला के लिए संस्था के मित्र सागनिक चक्रवर्ती (सिलीगुड़ी) को आमंत्रित किया गया । इस कार्यशाला के पूर्व सागनिक जी का कई बार इलाहाबाद आना हुआ एवं कार्यशाला के संभागियों से कई चरण की बात-चित तथा इस क्लाओन अभिनय रीति पर कई चर्चाएँ भी हुई हैं ।

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरि
शनिवार, 11 फरवरी 2012, इलाहाबाद, पांच प्रदेश, 17 संस्करण, नगर संस्करण
www.livehind

सीखा अभिनय

एक्स्ट्रा एन आर्गनाइजेशन की ओर से रेड नोज क्लाउन विद्या की दस दिवसीय कार्यशाला का शुक्रवार को समापन हु कलाकारों ने सिविल लाइंस स्थित सुभाष चौराहे पर इस कला का प्रदर्शन भी किया। कलाकारों को सिलिगुड़ी से आ चक्रवर्ती ने रेड नोज क्लाउन विद्या का प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर आशुतोष पांडेय, संदीप यादव, सिद्धार्थ पाल, वि आदि ने अभिनय किया। ● हिन्दुस्तान

यह क्लाओन अभिनय की इलाहाबाद शहर में पहली कार्यशाला रही है । इस कार्यशाला में एक सौ रुपये की प्रवेश शुल्क का प्रावधान रखा गया ताकि सगनिक जी का गाड़ी-भाड़ा इंतजाम किया जा सके । कार्यशाला में आने वाले बारह संभागियों का ऑडिशन के माध्यम से चयन किया गया ।

कार्यशाला का मुख्य स्थल इलाहाबाद का कंपनी बाग रखा गया । माह में 10-10 दिन के तीन चरणों में चलने वाली यह कार्यशाला सुबह तीन घंटे एवं शाम को तीन घंटे रखी गयी । क्लाओन एक्टिंग के इस कार्यशाला में

मुख्य रूप से हमारे आस-पास के वातावरण के साथ कैसे क्लाओन अभिनय किया जाए के साथ शुरू हुई । 3 जनवरी-2012 से शुरू होकर यह कार्यशाला 10 फरवरी-2012 तक चली । इस कार्यशाला के अंतिम दिन इलाहाबाद के सुभाष चौराहे एवं इसके आस-पास क्लाओन अभिनय खेला गया ।

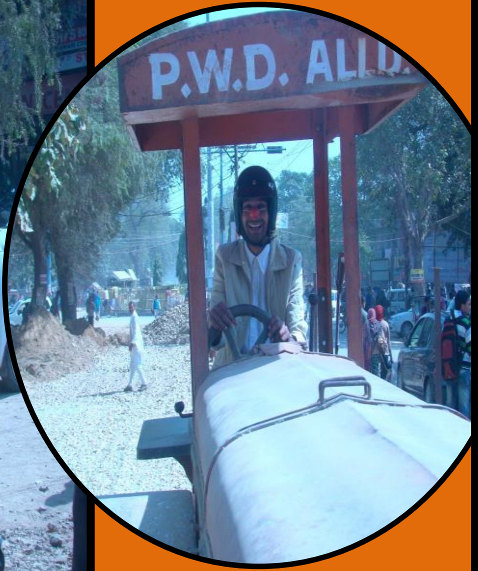

इलाहाबाद     युनाइटेड भारत, इलाहाबाद 11 फरवरी, 2012

# कुछ भी कहो, कुछ भी करो, हम हंसते रहेंगे

**युनाइटेड समाचार सेवा**

**इलाहाबाद, १० फरवरी।** शुक्रवार को एकस्ट्रा एन आर्गनाइजेशन की ओर से सुभाष चौराहे पर सागनिक चक्रवर्ती के प्रशिक्षण में चल रही १० दिवसीय रेड़ नोज क्लाउन कार्यशाला का समापन १२ बजे हुआ। इस कार्यक्रम के जरिये जनता के समक्ष क्लाउन्स अपनी गतिविधियों के द्वारा संवाद स्थापित किये। वो सभी क्लाउन्स अपनी नाको पर रेंड़ कलर का नोज लगाकर लोगों के समक्ष अजीबो, गरीब हरकते कर रहे थे। क्लाउनो का कहना था कि यह थीम डिजाइन हिन्दुस्तान में पहली बार हुआ।

इसके जरिये हम सभी क्लाउन जनता के समक्ष कुछ भी हरकते करते है। लेकिन वह बुरा नही मानते इसी के जरिये अपने आप को संवेदनशील और अपने दिल की सभी

**● रेड नोज क्लाउन विधा का अभ्यास**

इक्छाओं को आप पूरा कर सकते है। इस विधा में क्लाउन्स किसी भी चीज के लिए न नही बोलते अगर खाने के लिए कहेंगे तो हॉ और पीने के लिए तो भी हॉ का ही जवाब देंगे।

कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों में संदीप यादव, सिद्वार्थ पाल, आशुतोष पाण्डे, सागर सिंह, विनोद सरोज आदि लोगो ने पब्लिक के साथ इंट्रोडक्शन किए।

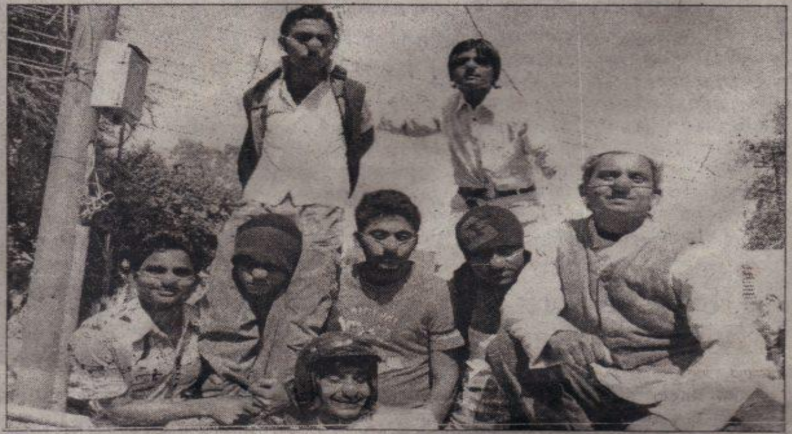

रेड नोज क्लाउन विधा का प्रदर्शन करते युवक।     छाया : युनाइटेड भारत

अप्रैल –मई

## कार्यकारिणी सदस्यों की बैठक

खेला गया  संस्था के कार्यकारिणी सदस्यों की बैठक इलाहाबाद में दिनांक 3 अप्रैल  -2012 को हुई । इस बैठक के निम्न मुद्दे रहे थे :-

- संस्था का मेमोरंडम अपडेट करवाना ।
- संस्था की कार्य योजना ।
- फाइनन्सियल स्रोतों पर चर्चा ।
- आगामी नाट्य निर्माण का फाइनन्सियल स्रोत ।
- नाट्य निर्माण की योजना पर चर्चा ।
- संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार से नाट्य निर्माणों में सहायता के लिए, आवेदन करना तय हुआ ।

जुन-सितम्बर

## नाटक डैडलॉक का निर्माण एवं प्रस्तुतियाँ

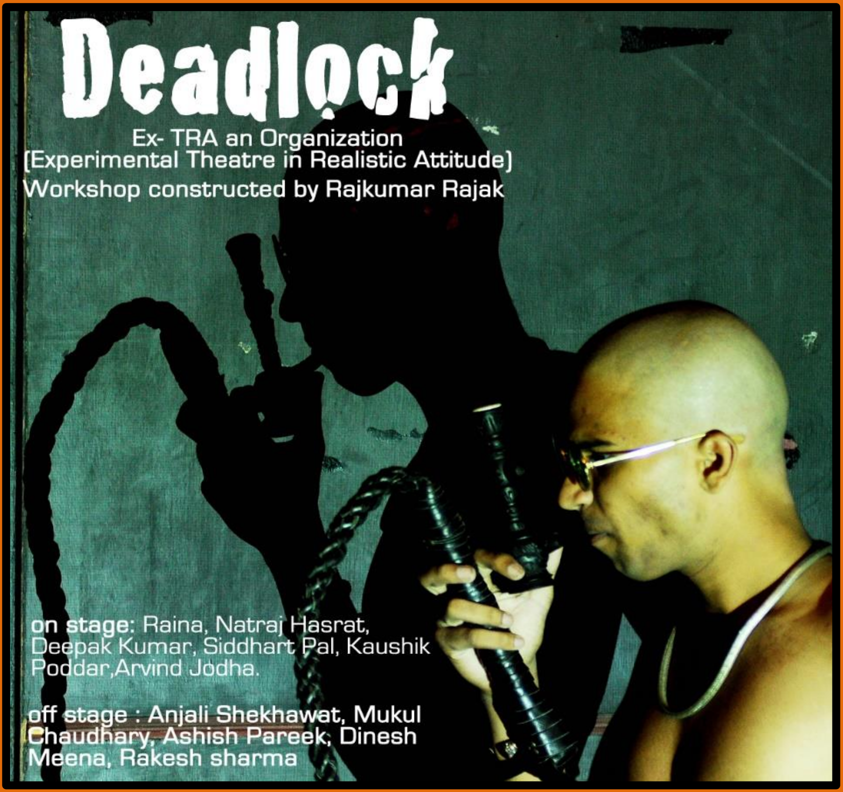


संस्था के अपने इतिहास में यह सबसे अलग प्रकार का नाटक रहा है , इस नाटक का पहले से कोई नाट्यलेख नहीं था । यह नाटक निर्माण आशुअभ्यासों से हुआ । जो तीन अलग –अलग चरणो एवं अलग-अलग शहरों में हुआ ।

नाटक का नाम तो बहुत बाद में आया , सबसे पहले हम इलाहाबाद में इस पर यानि इसके विषय वस्तु पर कार्य कर रहे थे । विषय वस्तु ये रहा था की मानव जीवन में होने वाले मोनोटोनस, जो राजनीति का भी मोनोटोनी है। इन मोनोटोनों से हम ज़िदगी के सफ़ोकेशन चक्र में फंस कर एक फतिगे की तरह अंत की ओर बढ़ जाते है।

इस कारण इस नाट्य निर्माण का नाम जयपुर में डैड लॉकपड़ा । इलाहाबाद से रायना राहा, सिधार्थ पल , दीपक कुमार और राजकुमार, कोलकाता से कौशिक पोद्दार , दिल्ली से नटराज हसरत और स्वेतकेतू मजूमदार रहे । जयपुर से अरविद जोधा, अंजलि शेखवात , राका, दिनेश मीणा रहे हैं ।

इस नाट्य निर्माण के लिए नटराज हसरत और अरविंद जोधा ने अपने से ज़िम्मेदारी ले ली इसके फाइनैनसियल पक्ष को देखने के लिए , इस नाट्य निर्माण का पहला चरण

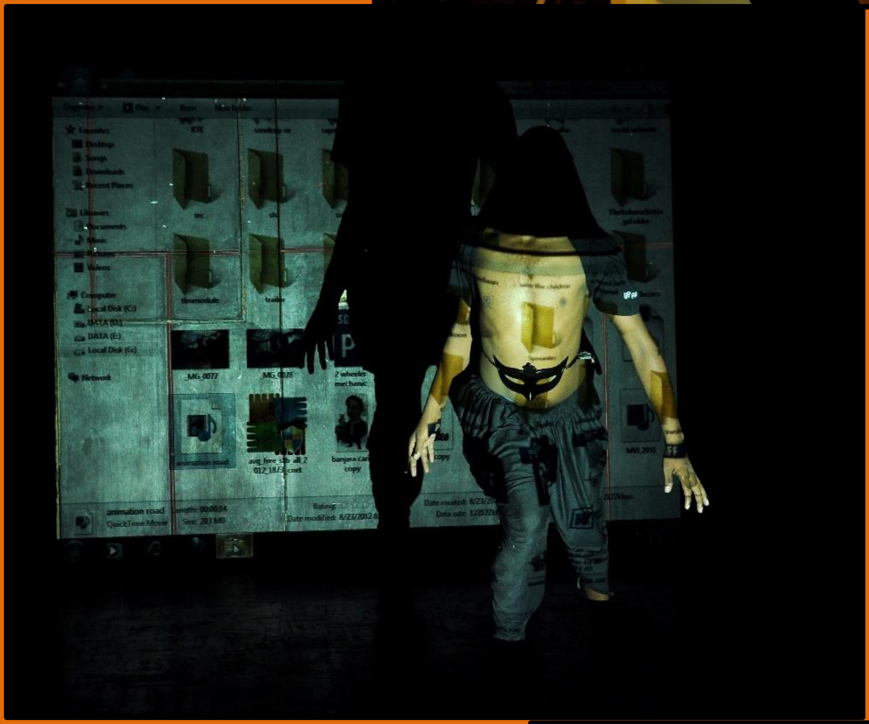

इलाहाबाद में 20 दिन जुलाई में चला, द्वितीय चरण नई दिल्ली के रोहिणी में 20 दिन चला और तृतीय चरण जयपुर के अरविंद जोधा के स्टुडियो में भी 20 दिन चला । लगभग 60-70 दिनों का इस नाट्य निर्माण की जयपुर के रबीन्द्र मंच पर 13 सितम्बर को  हुई ।

प्रथम प्रस्तुति से संतुष्टि न होने के कारण इस नाटक को फिर से निर्मित कर के अरविंद जोधा के स्टुडियो में स्थित दीवार में एक आलमीरा नुमा स्थान पर पुनः प्रस्तुति की गयी ।

इस नाटक में कुल लगभग 70-80 हज़ार तक के खर्च हुए हैं, लेकिन संस्था ने पहले से

कागजों से भी बोल रखा था की नाटक में एवं नाट्यकर्मियों को जो भी ज़रूरत हो वो दान कर्ता स्वयं दे , न की रुपए हमें दें ।

## ओक्टोबर-दिसम्बर

ओक्टोबर में इस नाटक डैडलॉक का पुनः निर्माण शुरू हुआ और 28 ओक्टोबर को राष्ट्रिय नाट्य विध्यालय दिल्ली के छात्र यूनियन के अनुरोध पर इस नाटक का मंचन राष्ट्रिय नाट्य विध्यालय के सम्मुख नमक मंच पर हुआ ।

इसके बाद के महीनों में सभी अपने-अपने स्तर पर अपनी और संस्था की सहायता के लिए कुछ अलग-अलग नाट्य संस्थायों में जा कर नाट्य कार्यशालाओं का आयोजन किया ।

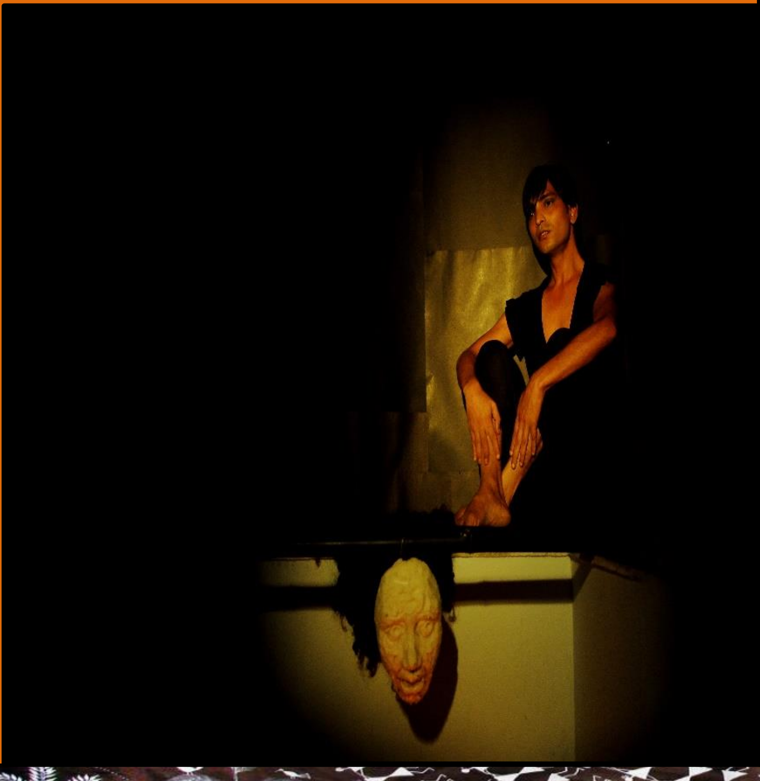

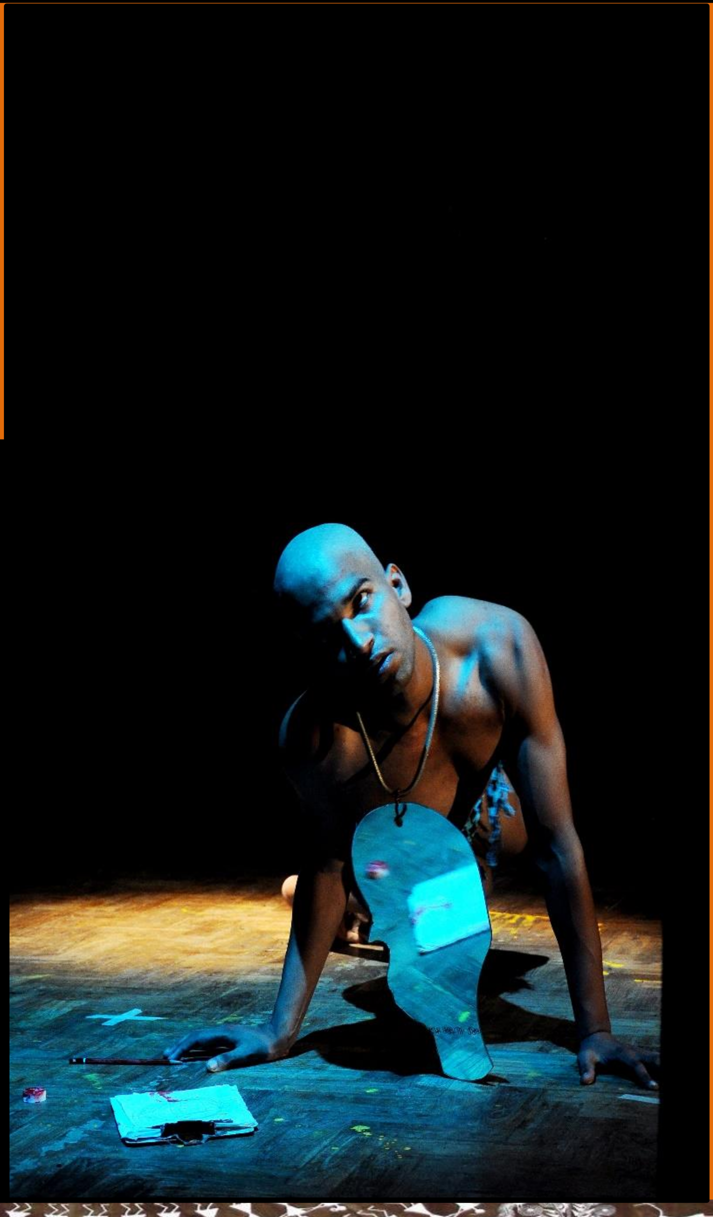

## इस वर्ष की चुनौतियाँ

वर्ष 2012 की चुनौतियाँ कुछ इस प्रकार रही हैं:

- नाट्य निर्माणों को कई चरणों में पूरा करना
- संस्था के पास इंटरनेट का अभाव –अंतर्राष्ट्रीय रंगकर्मियों एवं उत्सवों में भाग लेने के लिए संवाद
- ICCR में आवेदन न हो पाना, इलाहाबाद के NCZCC के द्वारा हमारा आवेदना स्वीकार न करना।
- संस्था की वेब साइट
- फाइनाइन्सियल स्रोत